श्री गंगाईनाथाय नमः

विश्व में ध्यान एवं सिद्धयोग

पंचागः-चैत्र शुक्ल एकम विक्रम संवत् २०७७ से फागण शुक्ल पूर्णिमा विक्रम संवत् २०७७ तक।

Email ID ramniwssiyag@gmail.com

मोबाईल नंबर/ दूरभाष अंकः- 09461116612, 9680817566

माध्यमः-श्री रामनिवास सियाग जारी करने की दिनांकः-चैत्र शुक्ल एकम विक्रम संवत् २०७७

स्वैच्छा से यदि इस मिशन में आर्थिक सहयोग करना चाहें तो बैंक खाता संख्याः- 36295640367.

भारतीय स्टेट बैंक, जोधपुर मैन ब्रांच, हाइकोर्ट कैम्पस। IFSC: SBIN0000659

१७२. बिन्दु भविष्यवांणियों के।

(नोटः-१७२. विशेष कैलेण्डर २०२० कोपीराईट नहीं है। ये भविष्यवाणियां सन् २०२० में आपको भौतिक जगत में सत्य प्रमाणित होती लगे तो इसकी फोटो कोपियां कराकर आप सब ज्यादा से ज्यादा देशवासियों को वितरित कर सकते हैं। यह पैसे कमाने का अभियान नहीं है। भविष्य तथा सत्य से अवगत कराने का अभियान है। ज्यादा से ज्यादा विश्व मानवता प्रलय से बच सके। इस लिखावट के लिए कोई जवाबदेह तथा जिम्मेदार नहीं है। १०० प्रतिशत सत्यता की नाथमत की वचनबद्धता है।)

''भव्य इमारत खड़ी होगी इसी सतयुगी पंचांग से और भी बहुत कुछ निकलकर आएगा इसी तेजस गुफा से। जो गुप्त समाधि है। जिसकी समाधि है वही लिखा रहा है। प्राचीनकाल का इतिहास पुनः दोहराया जाएगा हिन्दू संस्कृति का तथा सनातन धर्म का। जिस पर विश्व आश्चर्य करेगा। सनातन धर्म की नींव बहुत मजबूत है। जिसे आजतक कोई नहीं हिला सका। उसी पर पुनः भव्य इमारत खड़ी होगी। सनातन धर्म ''विश्वधर्म'' होकर उभरेगा। ऐसे ही रामलाल जी सियाग को संसार में नहीं उतारा है। हमारी प्रतिष्ठा का सवाल है। आज तक नाथमत कभी विफल नहीं हुआ। ऐसी सतयुगी शक्ति आज भी नाथों में प्रज्ज्वलित है।''

१.वचन सिद्धियां जो बाईबल के अनुसार। नेस्त्रोदमस की भविष्यवांणियां। कोरोना वायरस उसका एक अंग है। अब नया आएगा सोरोना वायरस। जो मात्र एक रात्रि में ही भारत देश की जनसंख्या को मारेगा। चीन में तो कोरोना को समय लगा। मगर भारत में फैलकर एक करोड़ से पांच करोड़ के बीच जनसंख्या को मारेगा। मार्च २०२० संक्रमणकाल। विश्वास नहीं होता मगर प्रमाणित सत्य है। जो सोरोना वायरस होगा। सोरोना का अर्थ है सो+रोना अर्थात् सोकर रोना। दुष्प्रभावित लाशें सड़ान्ध मारेगी।

२. विश्व तांत्रिक नेटवर्क ध्वस्त हो चुका है। बाइबल में वर्णित क्लीसिया का अस्तित्व समाप्त किया जा चुका है।

३.सतयुग आगमन सुनिश्चित किया जा चुका है। २ अप्रैल से बड़ी कार्यवाही भौतिक जगत में क्रियान्विति। जो विश्व स्तरीय कार्यवाही की क्रियान्विति। मार्च क्रान्ति के बाद बड़ा भूकम्प राजस्थान प्रदेश में आएगा।

४.आगजनी अप्रैल आखिर में, अतः राजस्थान खाली करा दो।

५.शैतान सक्रिय होगा माह मई २०२० विश्वयुद्ध की चेतावनी के साथ। ४८ घण्टे बबार्डमेंट।

६.सतपाल जी महाराज वापसी नवंबर २०२० से भारत भूमि पर।

७.अग्निकाण्ड, विश्व झकझौरा जाएगा इसी २०२० में।

८.मार्च क्रान्ति आंखों के सामने २०२०.

९.विपणन और वितरण प्रारम्भ २०२० से विश्व व्यापी अभियान।

१०.सता और संगठन का तालमेल पुनः होगा। अवतार को धरती पर उतारा जाएगा नाथमत की कमाण्ड में।

११.साजिश विफल हो चुकी के.ए.पी.पी. पर। विरोधी मुंह की खाएंगे। जो गायत्री को कुचलना चाहते थे।

१२.वैश्विक गतिविधियां विकराल रूप धारण करने वाली है इसी मार्च २०२० से मक्का-मदिना से।

१३.एक अरसे के बाद वापस यादगिरी आई है। अपने तुम्हें पहिचानेंगे। इतने दिन भूल गए थे। अपने अहम् तथा भौतिक धन के कारण। वे अब याद ही रखेंगे। मध्यम दूरियां बनाकर रखना।

१४.माह मार्च-अप्रैल केवल सांत्वना देना जो सामने हो उसे, जो पास हो उसे। कोई राज मत उगलना।

१५.विश्वयुद्ध के समीकरण तेजी से आगे बढ़ेंगे।

१६.जून विशेष महिना। जनगणना में आबादी बहुत घटेगी। भारतीय जनगणना वर्ष।

१७.भारत तथा विश्व की १८ करोड़ आबादी मारी जाएगी एक ही झटके में जून माह में। पके पान झड़ेंगे। प्रकृति बदला कार्यवाही अर्थात् पतझड़ मौसम। अमेरिका में विनाशकारी भूकम्प मई के आसपास।

१८.वर्गीकरण दो भागों में, स्पष्ट विभाजन रेखा खींची जाएगी। ६६ प्रतिशत और ३३ प्रतिशत के बीच। मुकाबला ६६ प्रतिशत का आपस के बीच रहेगा।

१९.१८ दिसंबर को कालीरात होगी।

२०.अथक प्रयासों के बाद इस मिशन को बचाया जा सका।

२१.१८ अप्रैल प्रतिवर्ष विश्व धर्म अवतरण दिवस झौंपड़ा वेदी गांव-मोरनावड़ा, पोस्ट-सोयला, जिला-जोधपुर(राजस्थान) पर महोत्सव मनाया जाएगा।

२२.निजाम की गोली लगने से मौत, जो भारत में तांत्रिक नेटवर्क चलाता था। वह ७७ वां टावर था।
२३.सता संघर्ष ऐसे मोड़ पर पहुंचेगा कि घमासान का रूप ले लेगा। मारो या मरो। राजनीति + हिन्दु-मुस्लिम ध्रुवीकरण संगठित सशक्त। दोनों आग में घी का काम करेंगे।
२४.घोर कलयुग अन्तिम सांसे गिन रहा है। जिसका सूक्ष्म जगत में अर्थात् भगवान के घर में पतन विभिन्न कारणों से सुनिश्चित किया जा चुका है। जिसकी भौतिक जगत में क्रियान्विति सर्वप्रथम जैविक हमले से प्रारम्भ हो चुकी है।
२५.मायावी खेल खत्म। जो घोर कलयुग का मूल आधार था। धनबल तथा जनबल एक साथ समाप्त होंगे।
२६.देश को युद्ध में झौंक दिया जाएगा मोदी कमान में। कोई नहीं बचा सकेगा।
२७.मानाकि २८ फरवरी को भौतिक जगत में कुछ नहीं हुआ मगर सूक्ष्म जगत में सबकुछ हो चुका है। उतरप्रदेश राजनैतिक शुद्धीकरण का मजबूत आधार तैयार हो चुका है बाबा गंगाईनाथ जी की कमाण्ड में। अब भौतिक आंखों से दिखेगा। जिसकी तारीख २ अप्रैल।
२८.भयावहता इतनी खतरनाक होगी कि देश का दिल दहल जाएगा। खून के प्यासे धार्मिक तथा राजनैतिक झगड़े घमासान में बदलेंगे। पीछे हटने को कोई तैयार नहीं। मौतों का आंकड़ा यूपी तथा दिल्ली एक करोड़ ८५ लाख तक होगा। भारतीय राजनैतिक शुद्धीकरण। ऐसा ताण्डव पहले कभी नहीं हुआ, न होगा। विपरित परिस्थितियों में।
२९.संक्रमंणकाल मार्च। २७ फरवरी से २९ मार्च तक।
३०.२ अप्रैल की कार्यवाही विधिवत।
३१.मई भूकम्प।
३२.जून अतिवृष्टि मध्यप्रदेश।
३३.जुलाई विश्वयुद्ध की तैयारी।
३४.गायत्री आराधना के अनुभव, सहस्त्रार यात्रा, सहस्त्रार सेवा तथा ''विश्व प्रसिद्ध भविष्यवांणियां, विश्व में धार्मिक क्रान्ति-९२'' चारों पुस्तकों का प्रकाशन एक साथ अतिशीघ्र।
३५.अवशेषकाल सुरक्षित।
३६.असली साहित्य, सतयुगी साहित्य मददगार युग परिवर्तन में। सकारात्मक सोच के लोग पढ़ेंगे। निम्न और मध्यम वर्ग के लोग जो प्रलय में बचेंगे। ३३ प्रतिशत बचने वाली मानवता को ये उपलब्ध कराने का आदेश है।
३७.सरदार जाति पंजाब से विलुप्त होगी हिमालय विखण्डन के दौरान सन् २०२० में।
३८.राजनैतिक ऊथल-पुथल इस देश को अस्थिर करेगी इसी मार्च २०२० में। संकट ही संकट। इन भूखे भेड़ियों को कुछ भी नहीं दिखता। मार-काट, खूनी संघर्ष। राजनीति के आगे प्रश्नवाचक चिन्ह लगेगा। ऐसा नजारा मार्च, अप्रैल २०२० में।
३९.आवारा घुमन्तु सैक्सी पर्यटक नेस्तनाबूद होंगे।
४०.अर्थव्यवस्था चौपट।
४१.मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार एक एडवाईजरी जारी करेगा कि बिना मास्क लगाए कोई नागरिक अपने घर से बाहर नहीं निकले। जानलेवा बीमारी महामारी घोषित होगी भारत में। अध्यात्म विज्ञान का सातवां आसमान ही बचाएगा। जो सबके समझ में नहीं आता। कोरोना विकराल रूप धारण करेगा। ४८ घण्टों में नजारा कुछ अलग। एक नया मोड़। जो अनछुआ, अनजाना, भौतिक जगत की सरकारें बेखबर। दिनदहाड़े लाशें बिछेगी, अकाल मौतें। रावणवंशीय एकमुश्त मरेंगे एक करोड़ से ज्यादा। वह दिन आ ही गया, शीतला सप्तमी के बाद।
४२.वर्कशोपः-जहां मिस्त्री काम करते हैं कारखाने सूनें नजर आएंगे। जरूरत ही खत्म हो जाएगी। नए वाहनों/उपकरणों की भरमार होगी तो पुराना कोई उपयोग नहीं करेगा आगामी एक साल तक। मानवता ही कम बचेगी। ऐसा खतरनाक २०२०.
४३.जोधपुर शहर के तहखाने तो पानी में डूबेंगे। ऐसा प्रकृति का कहर बरपेगा। मार्च २०२०.
४४.स.ए. घटना कागजों में सिमटकर नहीं रहनी चाहिए। इस पत्र को सरकार को भेजा जाना चाहिए हिन्दुत्व रक्षार्थ। आमजन में आस्था दृढ़ होगी। मानवीय दृष्टिकोण को साथ लेकर चलना पड़ेगा।
४५.मुर्दाबाद क्रियान्विति अनेक कारणों से सन् २०२०. अनहोनी, अकल्पनीय घटनाएं। सरकारें बेखबर।
४६.पटना, बिहारः-आतंकी घटना को अंजाम दिया जाएगा। १०० से ज्यादा लोगों के चिथड़े उड़ेंगे। नीतिश सरकार बेखबर।
४७.आतंकवादियों द्वारा एक रेल दुर्घटना भी की जाएगी।
४८.जमशेदपुर क्रान्ति की जाएगी ४५ मिनट में।
४९.यह नेस्त्रोदमस की भविष्यवांणियों का विस्तार रूप है। सुलझा हुआ रूप है।
५०.सैनिक क्रान्ति भारत-पाक।
५१.पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति विनाश के कगार पर खड़ी है। खाड़ी में भू-चाल हेडिंग के तहत एक कदम आगे बढ़ेंगे। ट्रंप की हत्या अगली कार्यवाही की क्रियान्विति होकर रहेगी मई के आसपास भौतिक जगत में।

५२.अ.ग.मु., राजस्थान सरकार का जीवन बहुत कम शेष बचा है। पानी के साथ बहकर शव झाड़ियों में मिलेगा गृहनगर में।
५३.आगे की सारी शान्ति वार्ताएं विफल होगी विश्व स्तर पर। कोई समझौता प्रयास सफल नहीं होगा विश्व-पटल पर। जिससे तय हो जाएगा कि तीसरा विश्वयुद्ध तो लड़ना ही पड़ेगा।
५४.भारत के समीकरण और ज्यादा बिगड़ने वाले हैं। शीतलाष्टमी से भौतिक जगत में क्रियान्विति नजर आएगी। सहम जाएंगे शहरवासी। पलायन गांवों की ओर। शहरीकरण का अंत।
५५.हाईवे बन्द, रेलें जाम। सरकारें कुछ भी नहीं कर पाएगी, नाकाम साबित होगी। कारण प्रकृति बदला कार्यवाही। किसान खून के आंसू रोते हुए उपरोक्त क्रियान्वितियां करेंगे।
५६.पंचागः-हिन्दी तिथि के अनुसार जारी करने का आदेश है। चैत्र शुक्ल एकम वर्ष प्रतिपदा हिन्दी तिथि के अनुसार। उपरोक्त २०७७ का पंचाग होगा अध्यात्म विज्ञान का।
५७.दूर-दूर तक शमशान भूमियों में चीताएं जलती नजर आएगी। एक रात ऐसी भी। जिसका नामकरण २८ फरवरी क्रूर रात्रि। सूक्ष्म जगत में सारा उसी रात तय हो चुका था बाबा श्रीमान् गंगाईनाथ जी की कमाण्ड में।
५८.भारत अविभाज्य अंग जम्मू-कश्मीर सदा-सदा के लिए प्रकृति आजाद करेगी। मुद्दा ही मिट जाएगा। फिर पाकिस्तान किसकी राग अलापेगा।
५९.भारत विश्व शान्ति का सूचक आज तक तो था। मगर अब सबसे ज्यादा अशान्ति उत्पन्न होने वाली है। ईसा मसीह के श्राप के कारण। चहूं ओर खून की नदियां ही नदियां दिखाई देगी। यह अप्रैल आखिरी सप्ताह का संकेतक है।
६०.अन्तिम विजय विश्व चैम्पियन प्रतियोगिता में मा. की होकर रहेगी नाथमत वचन। सिद्धलोक मुख्यालय के आशीर्वाद के कारण।
पाण्डव सुरक्षित बचेंगे नाथ नगरी में। किसी को भनक मत लगने देना अन्तिम समय तक। गुप्त यात्रा गुप्त आवास। फिर चिल्लाते रहेंगे इनको किसने बचाया। ये क्यों बच गए? इसका निराकरण केवल नाथों के पास। पाण्डव नगरी अविनाश नगरी प्रमाणित होगी।
६१. उचित कार्यवाही सरकार भी करेगी। मगर नादान। उसकी जेब से पैसा जाएगा मदद हमारी होगी। सर्दियों में ठसा घी टेढ़ी अंगूली से ही निकलता है। सीधी अंगूली से नहीं निकलता है। एक करोड़ ६१ लाख। इसी कारण इसे ६१ वें बिन्दु पर लिखाया। यह नीजी है।
६२. साख देते हैं तेजस वाले उपरोक्त सारा १०० प्रतिशत प्रमाणित सत्य होगा। विश्वास बहाली हेतु यह २०२० का कलैण्डर जारी किया गया है। ज्ञान अमूल्य। आस्था, दृढ़ आस्था, हौंसला बुलन्द होगा।
६३. विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) विफल।
६४. वाराणसी शहर/बनारस हिन्दू नगरी अद्यतन की जाएगी। विश्व विख्यात प्राकृतिक सौन्दर्यकरण से सुशोभित होगी। प्रलय के पश्चात् उत्तर प्रदेश की राजधानी बनेगी।
६५. राजकीय कार्य में बाधा पर काफी खतरनाक मुकदमा बनता है। यहां से भी एक ऐसा मुकदमा बना है। जिसकी भरपाई दो अक्षम्य अपराधियों को भुगतान करके करनी पड़ेगी। रूह कांप उठेगी। जो घटनाक्रम दिसंबर २०१९ में के.ए.पी.पी. में घटा वह साधारण नहीं था। इसी स्टेशन से ट्रस्ट बचा था।
६६. अब तोल-मोल का समय नहीं है। प्राण बचाने हेतु अवतारवाद की शरण में आएंगे करोड़ों की संख्या में। भारती पुनः अवतारों की धरती नाम से सुशोभित होगी। दिसम्बर २०२० तक।
६७. सतयुगी साहित्य -
१. अध्यात्म विज्ञान का सामान्य परिचय। (अभी उपलब्ध नहीं हो पाएगी।)
२. गायत्री आराधना के अनुभव। (उपलब्ध) पृष्ठ-६०, मूल्य-१०० रुपए।
३. विश्व मानचित्र। (अति गोपनीय पुस्तक है। अतः उपलब्ध नहीं हो पाएगी।)
४. सहस्त्रार यात्रा। (अतिशीघ्र उपलब्ध होगी।) पृष्ठ-८०, मूल्य-१०० रुपए।
५. सहस्त्रार सेवा। (अतिशीघ्र उपलब्ध होगी।) पृष्ठ-६०, मूल्य-१०० रुपए।
६. ''विश्व प्रसिद्ध भविष्यवांणियां - विश्व में धार्मिक क्रान्ति-६२''(अतिशीघ्र उपलब्ध होगी।) पृष्ठ-६२, मूल्य-१०० रुपए।
६८. वेद विज्ञान उपरोक्त साहित्य। संजीवनी मंत्र प्राण फूंकेगा विश्व मानवता में।
६९. दिनांक १६.०३.२०२०. तक भारत में कोहराम मचेगा। धो. नाथमत का वचन है। प्रमाणित सत्य।
७०. सैंसेक्स २१,००० पर तथा निफ्टी ८००० पर आकर रूकेगा। सटोरियों के हार्टअटैक होंगे। उसके बाद अगली गिरावट माह अप्रैल २०२० में देखने को मिलेगी। निफ्टी ५,००० पर रूकेगा। शेयर १७,००० से गिरकर ८,००० पर रूकेगा। यह विष्णु कला का उपयोग है। पावर अपने हाथ में ले लेना। उपरोक्त प्रमाणित सत्य।
७१. ब्लादिमीर पुतिन घायल अवस्था में अस्पताल में भर्ती कराये जाएंगे। जहां उनके प्राण बचेंगे। अकाल मृत्यु नहीं होगी। मई के आसपास।

७२. संतवाणी – अमर वाणी होती है। अगर कोई सही संत है तो, वाणी से ही पहचान होती है संत की। वाणी कितनी प्रभावशाली है वचनबद्ध है या नहीं। पराविद्या में कहां तक पहुंचा हुआ है। निराकरण कितना हो पा रहा है कष्टों और समस्याओं का। गुणों की पूजा होती है जगत में।
७३. गुरु सियाग ने जो किया वह ऐतिहासिक था, अब नाथमत विश्व आश्चर्यचकित होने वाले क्रियात्मक परिणाम देंगे तो यह दर्शन ''विश्व-दर्शन'' होगा। चमत्कारिक परिणाम अप्रैल २०२० से मिलने शुरू हो जाएंगे। यह नाथमत का वचन है।
७४. विश्व स्तर पर शान्ति वार्ताएं विफल होने के बाद विश्व को आवश्यकता पड़ेगी विभिन्न धर्मों के अवतारवाद की। अवतार को ढूंढ़ेंगे। आखिर कौन है? वो तथा कहां है? वह जो हमें तीसरे विश्वयुद्ध में मरने से बचा सके? प्राण रक्षा हेतु यहूदि करूण पुकार करेंगे। इसाई सहायक को ढूंढ़ेंगे, हिन्दूवादी कल्कि अवतार को ढूंढ़ेंगे। वह तीनों एक ही व्यक्ति होगा जो सनातन धर्म से होगा, नाथमत वचन।
७५. यह कार्यप्रणाली पूर्णतः स्वतंत्र और निष्पक्ष रूप से कार्य करेगी परा विद्या में। इसमें कोई जातिवाद, परिवारवाद, धर्मवाद, राष्ट्रवाद, पूंजीवाद अर्थात् किसी तरह का वाद बचाने में मदद नहीं कर सकेगा। क्योंकि ये सारे वादी अन्दर से खोखले हो चुके हैं। इनका अस्तित्व समाप्त किया जाएगा। इनका झूठा अहम्, ये कर्मकाण्डी तथा पाखण्डी है। जिसे जड़ से समाप्त किया जाएगा।
७६. मोरबी गुजरात में है जो जिला है। उसका अन्त अजीबोगरीब तरीके से होगा। वहां मानव मरने लगेंगे और शहर खाली हो जाएगा। ऐसा प्रलय उनके लिए तय है।
७७. अकाल तख्त शिरोमणी गुरु द्वारा अमृतसर पानी में डूबकर पानी के साथ बह जाएगा। नामोनिशान मिटेगा स्वर्णमन्दिर का। सुबह तक साफ।
७८. भाखड़ा और नांगल दोनों बांध टूटेंगे। कल्पना करलो कितना विनाश होगा, हिमालय विखण्डन के तत्काल बाद ऐसा होगा। दोहरी मार जल प्रलय की पंजाब, हरियाणा, राजस्थान पर पड़ेगी। प्रकृति बदला कार्यवाही ज्येष्ठ का महीना।
७९. प्रलयकाल सन् २०२० रहेगा। कलयुगी मानव सभ्यता का अन्त होकर रहेगा।
८०. महामहिम राष्ट्रपति, भारत सरकार अपने देश के १३ राज्यों की शासन सता की बागडोर अपने हाथ में लेंगे। राज्यों द्वारा नहीं सम्भाल पाने के कारण। निर्वाचित सरकारें विध्वंश में चली जाएगी आपसी कलह, वैमनस्य, ईर्ष्या, पद लोलुपता के कारणों से।
८१. श्रीलंका रावणवंशीय शक्तियों का जो गढ़ था, और है, जल समाधि ले लेगा दक्षिणी भारत भूकम्प के दौरान। ऐसा केरल में भी होगा। विशाखापट्टनम भी पूर्णतः जल समाधि ले लेगा। अन्य शहर भी डूबेंगे। दक्षिणी भारत का नक्शा भविष्य का।
८२. असलियत जब उजागर होने लगेगी तो विश्व सकते में आ जाएगा। इसकी भविष्यवाणियां क्यों सत्य प्रमाणित हो रही है? कहीं अवतार तो नहीं हो गया है। विश्व मानवता सोचने पर मजबूर होगी। ऐसी शुरूआत अप्रैल से हो जाएगी। अक्टूबर में आंधी-तूफान की तरह छाने लगेगा यह ''विश्व-दर्शन''। सत्य को तो स्वीकार करना ही पड़ेगा। जहर की घूंट पीनी ही पड़ेगी कलयुगी लोगों को। अन्य कोई रास्ता नहीं बचेगा।
८३. सतयुगी साहित्य मददगार प्रमाणित होगा, सतयुगी लोगों के लिए। उनकी आस्था साहित्य पढ़ने से दृढ़ होगी। आत्मबल बढ़ेगा।
८४. कलयुगी व्यवस्था पतन की ओर तथा सतयुगी व्यवस्था बहाली की ओर भौतिक जगत में क्रियान्वित होती नजर आएगी सन् २०२० के अंत तक नाथमत की कमाण्ड में।
८५. विश्व स्तरीय कार्यवाहियों की क्रियान्वितियां बहुत तेजी से एक के बाद एक घटित होकर सन् २०२० में ३० का आंकड़ा छू लेगी। जिनका वर्णन ''विश्व प्रसिद्ध भविष्यवाणियां-विश्व में धार्मिक क्रान्ति-९२'' में किया जा चुका है। प्रमाणित पुस्तक है नाथमत की। नाथमत की वचनसिद्धियां उसमें लिखित है।
८६. विश्व स्तरीय कार्यवाहियों की अगली क्रियान्विति छठवीं भारत विभाजन होगा। जो आग में घी का काम करेगी। देश उबाल पर होगा। हमारे ही देश में देश द्रोहियों/गद्दारों की इतनी बड़ी करतूत। पारा और चढ़ेगा। सनातन वर्सेज मुस्लिम आमने सामने। फिर जो होगा उसका वर्णन किया जा चुका है।
८७.रामायण, महाभारत, गीता पिछला धार्मिक इतिहास रहा है अवतारों के कारणों से। इस बार का इतिहास विश्व इतिहास होगा। सद्गुरु का इतिहास होगा जो सम्पूर्ण सृष्टि के रचियता तथा संचालनकर्ता होगा है। जिसमें पिछले सारे युद्ध सामने आ चुके हैं। उन्हें जीतकर नया विश्व इतिहास कीर्तिमान स्थापित करेगा। भारत विश्व गुरु के रुप में पुनः पदस्थापित होगा। ''विश्व में धार्मिक क्रान्ति-९२'' महाग्रन्थ प्रमाणित होगा। जिसके इर्द-गिर्द पूरा संसार घुमेगा। नई चेतना से अनुप्राणित होकर विश्व की ३३ प्रतिशत मानवता बचेगी। वे सतयुगी मानव होंगे। यह सनातन धर्म की देन होगी। जो अनादि अनन्तकाल से चला आ रहा है। इसी कारण विश्व, ''हिन्दू-विश्व'' बनकर उभरेगा। नवीन सतयुग, परमेश्वर का राज्य पूरा विश्व।

८८.भारत, भारतीयता के कारण विश्व में अपनी नवीन पहचान बनाएगा। ऐसे चमत्कार अवतारों की पवित्र भारत भूमि पर होंगे। जो ईसा मसीह के चमत्कारों को भी पीछे छोड़ देंगे। पहले के अवतारों के चमत्कार गाय के खुर जितने छोटे लगने लगेंगे। शरीर की तुलना में गाय का खुर कितना छोटा होता है, वही हालत पूर्व चमत्कारों की होगी। वैश्विक चमत्कार होंगे, वैज्ञानिक कारणों सहित उन्हें उजागर किया जाएगा विश्व के अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय से। फिर इस मिशन को कोई नहीं रोक सकेगा। यह ऐसा धर्मयुद्ध है जिसकी शुरुआत तथा अन्त ऐतिहासिक होगा। विश्व प्रलय, तीसरा विश्वयुद्ध, ब्रह्माण्ड भूकम्प से इस धर्मयुद्ध का समापन होगा।

८९.महानारायणी कला जो सर्वश्रेष्ठ कला प्रयोग की जाएगी पहली बार विश्व स्तर पर इस विश्वयुद्ध से ३३ प्रतिशत मानवता को बचाने हेतु। बाकी की कलाए तो प्रयोग की जाएगी ही।

९०.विश्व मानवता चेतन और अतिचेतन अवस्थाओं को प्राप्त करके उन्हीं अवस्थाओं में रहकर अपने प्राण बचाएगी। मजबूरी हो जाएगी जिन्दा रहने हेतु उच्चतम स्थिति में पहुंचकर उसी अवस्था में जीवन-यापन करना। जिसका नेटवर्क सहस्त्रार कला से संचालित होगा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में इसके बाद एक और बात जो केन्द्रीय नेतृत्व में कार्यशील होंगे वे ब्रह्म-रन्ध्र से बाहर निकलकर सूक्ष्म शरीरों से सिद्धलोक मुख्यालय में सदैव प्रकट रहेंगे। जो उच्चतम स्थिति है। उद्देश्य ''विश्व मानव कल्याण सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड''। विश्व में नेतृत्व सदैव ईश्वर का ही चले। इसलिए ऐसा जरुरी है। उन्हें संरक्षण प्रदान किया जाएगा वेदमाता गायत्री द्वारा।

९१.उपरोक्त भूमिकाएं आसान नहीं है मगर स्थितियां और परिस्थितियां बनाकर आराधकों को ऐसा जीवन जीने हेतु मजबूर कर दिया जाता है जो भौतिक जगत में रहते हुए तो दिखते हैं मगर संसार की कुछ मानवता को जिन्दा बचाने हेतु स्वयं मर चुके होते हैं। इसी का नाम है ''महानारायण-कला''।

९२.लाल कार्यवाहियां भारत में जन क्रान्तियों का रुप धारण करेगी इसी सन् २०२० में।

९३.सकारात्मक सोच के लोगों को सम्भलकर इस समय का पूरा सदुपयोग करना चाहिए। यह परिवर्तनकाल है। जिसके अनुसार ढ़लना होगा। यथास्थितिवादी बने नहीं रहना है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। समय के साथ चलो। यह हिदायत है। भौतिक धन, भौतिक साधन, भौतिक सम्पति सब यहीं छूटने वाला है। साथ नहीं चलेंगे। सभी प्रकार का धन केवल ''संजीवनी-मंत्र'' होगा। अजपा विशेष मददगार होगा।

९४.रिश्ते, नाते, समाज, राग, द्वेष, मोह, माया आदि से ऊपर उठकर जीवन-यापन करना होगा। इस घोर कलयुग से बाहर निकलना होगा, विश्व की ३३ प्रतिशत आबादी को।

९५.स्त्री-परायण, पतिव्रता अपनी जगह पर होती है। मगर कुछ महामानवों को अपने आप को आत्मभाव में रुपान्तरित करके देवताओं तथा देवियों का राष्ट्र धर्म निभाना होगा। जो सर्वोच्च धर्म होता है। सता का विकेन्द्रीकरण किया जाएगा। जिम्मेदारियां तय की जाएगी। अपने-अपने उतरदायित्वों का निर्वहन करना होगा। अवज्ञा होने पर इसमें कठोर दण्ड का विधान होता है।

९६.शक्कर मीठी होती है परन्तु जो डायबीटीज को जन्म देती है। उसी प्रकार इसमें भी मीठास कर्तव्यों के प्रति अवहेलना को जन्म देता है। जिसके प्रति आराधकों को सदैव जवाबदेह कर्तव्य परायण रहना पड़ेगा। कोताही बर्दाश्त नहीं होगी। सिद्धलोक मुख्यालय में सारी कोल-डिटेल निकालकर फैसले किए जाते हैं। जिसमें आराधक मन में कैसे विचार रखता है उससे भी दोषी हो जाता है तथा दण्ड का भागीदार बन जाता है। मन, वचन, कर्म से शुद्ध होकर ही इस मानव मिशन में सफल हुआ जा सकता है।

९७.मानवीय व्याधियां दबाव के कारण आ जाती है। हमें इसके लिए किसी को दोषी नहीं ठहराना है। अपने स्तर पर ही निराकरण करना होगा। मार्ग ही दबाव लेने का है।

९८.त्वरित क्रियान्वितियों का समय आ चुका है। अब ढुलमुल नीति नहीं रहेगी। कारण कि २३ नवंबर २०१९ से आचार-संहिंता लग चुकी है। अपनी कार्यप्रणाली को त्वरित बनाओ।

९९.शेष की समीक्षाः-प्रत्येक आत्मा अपने सहस्त्रार में विराजमान परमात्मा से जुड़कर अपनी कार्यप्रणाली के शेष कार्यों की समीक्षा करें। कितना कार्य शेष रहा। अपना-अपना कार्य १०० प्रतिशत पूरा करें। परमार्थ तथा विश्व मानव कल्याण का उद्देश्य रखकर।

१००. पुरानी सरकारें इस महामारी (जैविक हमले) से निपटने में पूर्णतः विफल रहेगी। नई अध्यात्म विज्ञान की सरकार वैज्ञानिक पद्धति से संक्रमणकाल की बीमारी को नेस्तनाबूद करेगी। विश्व मानवता को बचाएगी। जिससे विश्व को आश्चर्य होगा। कुछ ही क्षणों में विश्व, संक्रमणकाल से मुक्त होगा। जैविक हमला निष्प्रभावी हो जाएगा योगियों की योगाग्नि से ब्रह्माण्ड के जीवाणु जलकर भस्म हो जाएंगे नाथमत की कमाण्ड में।

१०१.सत्य, धर्म, नीति, न्याय का काल प्रारम्भ होगा नववर्ष प्रतिपदा से भारत भूमि पर से। जिसकी गूंज विश्व में सुनाई दे जाएगी। समय, काल, परिस्थितियां बदल जाएगी। नववर्ष प्रतिपदा के शुरु होते ही। मारवाड़ अकालग्रस्त घोषित पहला नजारा।

१०२.वैकल्पिक व्यवस्था हर चीज की करके सारी क्रियान्वितियां विश्व पटल पर की जाएगी। ताकि बचने वाले मानवों को किसी अभाव/समस्या का सामना नहीं करना पड़े। जो पालक विष्णु का कार्य।

१०३.विभीषिका के कारण अकाल घोषित होगा। विभिषिका भीषण। जो मानवों को भी निगलेगी। फसलें चौपट होगी। भौतिक जगत की सरकारें बेखबर। यथास्थितिवादी जो ठहरे। पहले उन्हें आभास तक नहीं होगा। भौतिक आंखों से देखने के बाद सहम जाएंगे। फिर चिल्लाएंगे टी.वी. तथा मीडिया पर राजनेता। थोड़े दिनों बाद इतिश्री कर लेंगे।
१०४.राजस्थान का आयुध भण्डार सुलग उठेगा। बताओ कहां बचेंगे मानव? केवल सहस्त्रार में बचेंगे मानव, जो मानव के भीतर है बचाने वाला। अधिकांश विश्व मानवता ने उसे आज तक बाहर ही ढूढ़ा बचाने वाले को अथवा कहते रहे ऊपर वाला बचाएगा। हां, यह बात भी सच है कि वह है तो ऊपर सहस्त्रार में बैठा, परन्तु मानव के भीतर बैठा है। ढूढ़ने में गलती हुई। खामियाजा गम्भीर परिणाम भूगतने पड़ेंगे।
१०५.संहारक किसी को दिखता नहीं। वह छुपकर मानव द्वारा किए कर्मों का हिसाब करता है स्वतंत्र और निष्पक्ष होकर।
१०६.तीन लोक नौ खण्डों में सूक्ष्म जगत में विश्व में धार्मिक क्रान्ति पिछले ०१ अप्रैल २०१६ से चल रही है। जिसका प्रमाण किसी को नहीं दिया जा सकता। इसमें जो भी सूक्ष्म शरीरधारी उपस्थित है, जो दिव्य शरीरधारी हैं। वे जानते हैं कितना कठिन धर्मयुद्ध है। सूक्ष्मजगत का यह कार्य ०१ अप्रैल २०२० तक पूर्ण सफल होने वाला है। आगे सूक्ष्म जगत चलता है उसके पीछे स्थूल जगत अर्थात् भौतिक जगत चलता है। सूक्ष्म जगत में कलयुग समाप्त हो चुका है। अब उसकी भौतिक जगत में क्रियान्विति दिखना शेष है। जो प्रारम्भ हो चुकी है।
१०७.लोगों को लगता है ये चेतन समाधियां क्या कर रही है? भौतिक जगत के लोग सोचते हैं संसार को हम ही चला रहे हैं। हां, यह बात सत्य है कि सूक्ष्म जगत भी भौतिक जगत को संसार में आगे रखकर अपनी कार्यवाहियों को क्रियान्वित करता है। सूक्ष्म जगत हर किसी को दिखता नहीं है। क्योंकि यह उनका विषय नहीं है। सूक्ष्म जगत में कार्य करने के लिए मौत से पहले ही संसार के लिए मरना पड़ता है। तब यह कार्य सम्पन्न होता है। जिसके लिए संसार तैयार नहीं है। अफसोस इस बात का है कि भौतिक जगत के लोग सच्चे सूक्ष्म जगत के लोगों को मूलभूत सुविधाएं भी नहीं देते हैं। उनका शोषण करते हैं। बड़ी विडम्बना है।
१०८.अकाल मौतें जो अपने ही कुकृत्यों के कारण होगी, २५ प्रतिशत विश्व मानवता अपने धाम पधार जाएगी। तब सच्चे और अच्छे लोगों का विरोध बन्द होगा। बाधाएं हट जाएगी। ऐसे लोग नास्तिक होते हैं। विश्व में अपना ही साम्राज्य स्थापित करना चाहते हैं। मगर सन् २०२० में परिणाम विपरित ही निकलेगा।
१०९.काल कलवित लोगों की लाशों को छूने से उनके ही निकटतम डरेंगे। सोचो कैसे कुकृत्य है उनके? अन्तिम संस्कार के भी योग्य नही हैं ऐसे लोग। जो केवल जिन्दा लाशें हैं। जिन्होंने पृथ्वीं माता को नरक बना दिया था। उनकी समय सीमा समाप्त हो चुकी है उनकी राक्षसी प्रवृतियों तथा राक्षसी कुकृत्यों के कारण। जो आज तक तो भौतिक जगत में ठाकर बने बैठे थे। समय की बात है। उनका घोर कलयुग समाप्त होते ही उनकी जिन्दा लाशें खत्म हो जाएगी।
११०.महाशिव अपनी कमाण्ड में उपरोक्त समस्त कार्यवाहियों को क्रियान्वित करेंगे। संसार सूना नहीं है। उनके संचालक मण्डल भी है। यह आस्तिक लोगों का विषय है जिनकी भगवान में पूर्ण आस्था है। स्वयं भगवान उनमें हैं। हर क्षण हर जगह मानव शरीर के भीतर प्रकट है। ऐसा भगवान जो मन की बात को भी परा विधा से सुनता है। प्रत्येक क्रिया पर प्रतिक्रिया देता है। जैसे द्रौपदी के चीर हरण के समय चीर बढ़ाकर अन्दर से प्रतिक्रिया दी थी और इज्जत की रक्षा की थी। इसी प्रकार अर्जुन को भी तीसरा नेत्र खोलकर श्री कृष्ण ने अपना विराट स्वरुप अन्दर दिखाया था। संसार के समस्त मानवों की शारीरिक संरचना एक समान थी आज भी एक समान है। आगे भी मानव शरीर की संरचना एक समान रहेगी।
१११.गोस्वामी तुलसीदास जी ने बहुत पहले ही लिख दिया था कलयुग के बारे में-''कलयुग केवल नाम आधारा, सुमिरे-सुमिरे नर उतरे पारा।'' वह समय सामने आ रहा है।
११२.अंग्रेजी शब्द है God gift. अर्थात् भगवान की देन। फिर मानव अपने अन्दर कर्ताभाव क्यों लाता है? प्रत्येक कार्य भगवान को समर्पित करके करते रहना चाहिए। जबकि वह ईश्वर को भूल जाता है। संसार में फिसल जाता है। संसार के अनुसार अपने कर्म करके अपना जीवन नारकीय बना लेता है। अपनी आत्मा को घटिया कर्मों से मार देता है। आत्मा मर जाती है तो देर-सवेर वह शरीर भी मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। पहले आत्मा मरती है फिर शरीर मरता है।
११३.''भारत माला'' की चैन बनाकर तैयारी की जानी चाहिए। भारत के सकारात्मक सोच के लोगों को संगठित करने हेतु। उनके मोबाइल नंबर सार्वजनिक करके जिले, तहसील, राज्य की जिम्मेदारी सौंपने का आदेश है। इस पुरानी व्यवस्था की मदद ली जानी चाहिए। ताकि संगठन मजबूत हो सके।
११४.मानव संसाधन विकास मंत्रालय जो कार्य मानवता के लिए करता है उसी तर्ज पर कल्कि संसाधन विकास मंत्रालय बनाकर महायोगियों तथा योगियों के लिए मूलभूत सुविधाओं का विकास तथा विस्तार आवश्यक है।
११५.संग्रीला घाटी जो गुप्त रहस्य है विश्व मानवता के लिए। उसी की तर्ज पर जो गुप्त रहस्य है उन्हें गुप्त ही रखा जावे। कोई भी गुप्त रहस्य कभी उजागर नहीं होना चाहिए। कुछ जगहें ऐसी है जिन्हें गुप्त रखना आवश्यक है।

११६.रामबांण औषधि ८८ का आंकड़ा। जो सांसारिक फालतू झमेलों से मुक्ति दिलाएगा। धनबल का खात्मा। जिनके पीछे जनबल के चेहरे की चमक भी फीकी पड़ जाएगी। फिर आत्मबल बढ़ेगा। यह अप्रैल से प्रारम्भ हो जाएगा।
११७.वस्तुस्थिति जो केवल सत्यः-आगामी समय में केवल वस्तुस्थिति से अवगत कराना है। आगे से लेकर केवल सत्य ही बोलना है ताकि विश्वास बहाली होकर विश्वास बना रहे योगियों और महायोगियों का। मनगढ़ंत बातें मुंह से बाहर नहीं निकालें। योगी अपनी वचनबद्धता का पूरा ख्याल रखें।
११८.काम-वासना क्षींण पड़ते-पड़ते समाप्त ही हो जाएगी। तीसरे विश्वयुद्ध में वासना जलकर राख हो जाएगी। फिर संयमित जीवन जीएंगे मानव। कृष्ण और गोपियों वाला निस्वार्थ भाव से सच्चा प्रेम अवश्य दिखेगा।
११९.वीरांगनाओं की भी कोई कमी नहीं रहेगी वेदमाता गायत्री जी की कृपा से जो पुरुषों से कन्धे से कन्धा मिलाकर पूरा साथ देगी धर्म के मार्ग में। जो सच्ची गोपियां होगी।
१२०.ईरानी गतिविधियां तेल सप्लाई बाधित करने में मददगार रहेगी। फलस्वरुप विश्व के कुछ मुस्लिम विरोधी राष्ट्रों की तेल सप्लाई इसी २०२० में बाधित कर दी जाएगी। जो तीसरे विश्वयुद्ध हेतु प्रेरित करेगी। तेल का खेल फिर धर्म की धार, लड़ाई होगी आर-पार।
दुनियां बैठी है खायोड़ी खार, संसार पर पड़ेगी तीसरे विश्वयुद्ध की मार।।
१२१.विश्व की अर्थ व्यवस्था चौपट होगी। विश्व बैंक का दर्जा छिन जाएगा। जिसकी शुरुआत अप्रैल २०२० से हो जाएगी।
१२२.विश्व वशीकरण केन्द्रीय सता के अधीन। जो सहस्त्रार सता। सहस्त्रार कला विश्व संचालन कला। जिसके अधीन आएगा विश्व। विश्व से धनबल खींचते ही विश्व मानवता का दिमाग सही होने लग जाएगा। धनबल से उत्पन्न् बुराईयां जड़ से समाप्त होने लगेगी।
१२३.शहरीकरण का अतिशीघ्र पतन होने वाला है। लोग गांवों की तरफ पलायन करने लगेंगे। गांवों का जीवन स्वास्थ्यवर्धक होगा। दो कारणों से पहला भूकम्प तथा दूसरा महामारी।
१२४.प्रभू का द्वार गांवों से खटखटाया जाएगा। यह भविष्यवांणी है। शहरों पर तो मौत का खतरा मंडराता ही रहेगा विभिन्न कारणों से। सुख और चैन शहरों में नहीं मिलेगा। मूलभूत सुविधाएं गायब ही हो जाएगी। दुःखी रहना है तो शहरों में रहो, सुखी रहना है तो गांवों में रहो निकट भविष्य में।
१२५.खेती वालों का सुनहरा उज्ज्वल भविष्य होगा। किसानों को उनका हक बाबा गंगाईनाथ जी दिलाएंगे।
१२६.संत निरंकारी समागम विफल अपने उद्देश्यों में। नेटवर्क ध्वस्त जो असत्य पर आधारित था। अब मिशन चौपट। अस्तित्व समाप्त।
१२७.२८ देश आतंक की आग में ऐसे झुलसेंगे कि गृहयुद्ध हो जाएगा। जिसमें भारत भी शामिल है। पंजाब, पाकिस्तान, पश्चिम बंगाल जिसके केन्द्र होंगे। जहां खूनी होली खेली जाएगी मार्च-क्रान्ति में।
१२८.मावली, उदयपुर राजस्थान में है। सड़क दुर्घटना में असंख्य लोग बलि चढ़ेंगे।
१२९.राणा प्रताप सागर बांध टूटेगा।
१३०.भारत माता खून के आंसू रोने वाली है। मार्च क्रान्ति के कारण।
१३१.संग्रहालय नियति खारिज। कुछ ऐसे घटनाक्रम घटेंगे जिसके कारण गरीब, अमीर हो जाएंगे तथा अमीर गरीब हो जाएंगे।
१३२.भारत सहित पूरे विश्व में अमीर-गरीब का भेद मिटने वाला है। अप्रैल २०२० से प्रभावी कार्यवाही की क्रियान्विति।
१३३.जश्न मनाना विश्व मानवता भूल जाएगी। ऐसा कहर बरपेगा भारत भूमि पर। अप्रैल आखिरी सप्ताह।
१३४.एक बड़ा करिश्मा जैविक हमला नेस्तनाबूद किया जाएगा भारतीय मानवों को बचाने हेतु सिद्धलोक द्वारा संयुक्त कार्यवाही। निर्णायक फैसला लिया जा चुका है। केवल १० प्रतिशत जनहानि होकर बचाव होगा। गहरी साजिश विफल की जाएगी नाथमत की कमाण्ड में। संयुक्त उद्बोधन।
१३५.नरक से भी बदतर जीवन-यापन शहरों का जिससे शहरीकरण का पतन सुनिश्चित है। मूलभूत सुविधाएं नहीं मिल पाएंगी। पलायन करेंगे एकान्त ग्रामीण क्षेत्रों की ओर सुधार होने तक। अनेक कारण होंगे। शहरी जमीनों के भाव धड़ाम करके गिरेंगे। लेने वाला कोई नहीं मिलेगा। शहरीकरण का ऐसा पतन होगा।
१३६.आयुष्मान भारत योजना खट्टाई में पड़ जाएगी। भारत सरकार के कई उपक्रम विफल हो जाएंगे। सरकार की यथास्थितिवादी मानसिकता के चलते। विकास योजनाएं रोकनी पड़ जाएगी। गतिरोध आ जाएगा। मानवता को कैसे बचावें? यह मुद्दा बीच में आकर खड़ा हो जाएगा सन् २०२० अन्त तक। सरकार की कार्यप्रणाली के आगे प्रश्नवाचक चिह्न लग जाएगा? हमने सोचा क्या था? देश किस तरफ जा रहा है? हमारा नीति आयोग जो नीतियां बनाता है विफल रहा। यह समीक्षा परिणाम होगा मार्च २०२१ तक की वार्षिक समीक्षा का।
१३७.अ.जा. तथा अ.ज.जा. आरक्षण एक दिन स्वतः समाप्त माना जाएगा बिना किसी प्रयास के। राजनैतिक प्रलोभन समाप्त। यह व्यवस्था परिवर्तित होकर रहेगी कल्कि अवतारकाल में। ऐसी जागृति/जनचेतना आएगी विश्व मानवता में।

१३८.नहलाया जाएगा रुद्रसागर।
१३९.अति उज्ज्वल भविष्यवक्ताओं के चरित्रों पर कोई संदेह/शक नहीं करेंगे। जो सतयुगी साहित्यों का सृजन अपने प्रबल इष्ट सद्गुरु/कल्कि अवतार से जुड़कर करेंगे उन पर। शक की नजरें हट जाएगी। केवल सत्य ही उजागर होगा। केवल मा. पर सत्य प्रमाणित होगा।
१४०.विकल्प हर चीज का होता है। मगर आगे आने वाले सतयुग का कोई विकल्प नहीं होगा। उसके अनुसार विश्व मानवता को अपने आप को ढ़ालना ही पड़ेगा अन्यथा संसार छोड़कर जाना पड़ेगा। अन्य कोई रास्ता नहीं है।
१४१.दो ध्रुवीकरण सशक्त होकर विश्व पटल पर २०२० में उभरेंगे, जो आमने-सामने होंगे। पूरे विश्व को विश्वयुद्ध में धकेल देंगे। कोई नहीं बचा पाएगा। जानते हुए कि विश्वयुद्ध के दुष्परिणाम कितने घातक होंगे। मगर अवश्यम्भावी हो जाएगा तीसरा विश्वयुद्ध। मार्च, अप्रैल में झलक दिखने लग जाएगी।
१४२.स.ए. दुखान्तिका ऐसी स्थितियां और परिस्थितियों का निर्माण कर देगा कि अब तो आर-पार कर लो। अस्तित्व की लड़ाई है। या तो हम रहेंगे या फिर तुम रहोगे। इस धरती पर दोनों साथ नहीं रह सकते हैं। फिर खून खौल उठेगा। महाभारत शुरु होगा। नतीजे भयावह होंगे। जनसंख्या घट जाएगी भारत के दोनों पक्षों की।
१४३.मानव सहायता समूह भी उभरेंगे मगर उनका एक दायरा होगा। उसमें वो अपना कार्य प्रलयकाल में भी करते रहेंगे विश्व की बचने वाली ३३ प्रतिशत विश्व मानवता के कल्याण तथा बचाव हेतु। उनके पास संसाधन सीमित होंगे मगर आत्मबल से जीत जाएंगे।
१४४.वेद विज्ञान ही सबसे बड़ा औषधि का भण्डार होगा। ''संजीवनी मंत्र'' सभी बीमारियों की एक ही औषधि होगी। जिसमें ईश्वरीय सता गाढ़े फोरम में होगी। हनुमान जी के संजीवनी बूटी की तरह। जो सर्वसुलभ होगी। सर्वव्यापक होगी। प्रत्येक बीमारी की एक ही रामबांण दवाई विश्व व्यापी।
१४५.आईसोलेशन कैम्प अभी चल रहे हैं कोरोना वायरस के ईलाज हेतु। यह भौतिक विज्ञान की देन है। आवश्यकता पड़ने पर पूरे ब्रह्माण्ड का अध्यात्म विज्ञान का एक लैब सारे जैविक हमलों के जीवांणुओं को अपनी लैबोरेट्री में इकटठा करके महायोगियों की योगाग्नि से नेस्तनाबूद कर देगा। अध्यात्म विज्ञान में ऐसा सम्भव है। यह जगजाहिर होगा नाथमत की कमाण्ड में। इसे कोई नहीं रोक सकेगा। यह पूर्व निश्चित व्यवस्था है और इसकी भविष्यवांणी की गई तथा विश्व हिन्दी समाचार बी.बी.सी. को पूर्व में भेजी गई थी। तब विश्व स्वास्थ्य संगठन आएगा शरण में। अध्यात्म विज्ञान को प्रमाण देने पड़ेंगे विश्व के भौतिक विज्ञान के वैज्ञानिकों को तथा विश्व मानवता को। तब संसार मानेगा।
१४६.समय-समय की बात है। भौतिक विज्ञान तथा अध्यात्म विज्ञान का कार्यकाल चलता आया है और भविष्य में भी चलता जाएगा। दोनों विज्ञानें अपनी-अपनी जगह पर काम करती जाएगी। दोनों विज्ञानें एक दूसरे की सहायक है, विरोधी नहीं। उत्थान और पतन चलता आया है युगानुसार।
१४७.मानव शोध केन्द्र प्रयोगशालाएं विकसित होगी। फिर तुलनात्मक अध्ययन होगा। लाभ की तरफ विश्व मुड़ेगा प्रत्यक्ष परिणामों के आधार पर। कथा प्रवचनों से नहीं। क्रियात्मक परिणाम विश्व मानवता को अपने-अपने शरीरों के भीतर मिलेंगे और वो भी विज्ञान की भांति तब विश्व मानवता सत्य पर आधारित ज्ञान-विज्ञान की तरफ मुड़ेगी बिना देर किए। जिसका समय आ चुका है।
१४८.नौकरी और पैसा का महत्व क्षींण होता जाएगा। धनबल पर प्रकृति का प्रहार होने के कारण। हम किसी की भावना को ठेस पहुंचाकर पाप के भागीदार बनना नहीं चाहते हैं। मगर सत्य होगा।
१४९.आशावादी दृष्टिकोण रखकर ही सफल हुआ जा सकेगा। दूसरा ईश्वर से प्राप्त आत्मबल। बड़ी विकट स्थितियां और परिस्थितियां आएगी। मानव मौत मांगेंगे और मौत आगे भागेगी। इससे ज्यादा क्या बतावें?
१५०.महाकाल विकराल रुप धारण करके विश्व की दानवीय शक्तियों तथा उनके वंशजों का नाश करेगा। जो सूक्ष्म जगत में क्रियान्वित हो चुकी है। स्थूल जगत में क्रियान्वितियों की तैयारी आपकी आंखों के सामने है। जिसके लिए किसी को भी दोषी मत ठहराना। मानवीय कर्म ही जिम्मेदार है।
१५१.पश्चिम का आधुनिकीकरण विश्व मानवता को महाप्रलय की ओर ले जाएगा मगर नाथमत बीच में आकर उसे प्रलय में बदलेगा, जो हिन्दुत्व का भारतीयकरण होगा।
१५२.मानव की घोरकलयुगी सभ्यता विनाश के कगार पर खड़ी है। लेकिन भारतीयकरण कुछ मानवता को विश्व प्रलय से बचाकर प्रलय में बदलेगा। मानव सभ्यता का अन्त होगा।
१५३.मौलिक अधिकार जीवन-यापन का प्रकृति छीन लेगी विश्व मानवता से। प्रकृति ही निर्धारित करेगी कि किसको कैसे जीवनदान देना है? प्रकृति परमेश्वर के आदेश से चलती है।
१५४.सहज यात्रा मानव ही इस प्रकृति के हमले से बचेंगे। बुद्धि से कपट चालाकी करके प्रकृति को नरक बनाने वाले मानव प्रकृति के हमलों के शिकार हो जाएंगे। प्रकृति के साथ जिन्होंने खिलवाड़ किया है प्रकृति वापस उनसे बदला लेगी।
१५५.विश्व मानव कल्याण का लक्ष्य लेकर चलने वाले महामानवों को ईश्वरीय आदेश से प्रकृति अपने हमलों से बचा लेगी।

१५६.सरलतम जीवन, सहज यात्रा ही प्राणदान देगी।
१५७.मनोरमा वैश्विक समस्या बनकर उभरेगी। जो मन के पीछे चलने वाले लोग होंगे उनका जीवन खतरे में पड़ेगा। जो आत्मभाव से चलेंगे उनके प्राण बचेंगे।
१५८.विश्व संहारकाल प्रारम्भ संक्रमणकाल से मार्च २०२०. यह एक विश्व मानवता पर जैविक हमला है। जो छंटनी करेगा विश्व मानवता की। २७ प्रतिशत आबादी चपेट में आएगी। सबसे बड़ा विश्व व्यापी हमला विश्व मानवता पर। जो पूर्व निर्धारित तथा पूर्व निश्चित था। जिसकी भविष्यवांणियां भी है।
१५९.इसके बाद होगा परमाणु हमला विश्व मानवता पर। तीसरा हमला होगा प्रकृति का विश्व मानवता पर। रासायनिक हमले भी होंगे। यह तीसरे विश्वयुद्ध की कार्यप्रणालियां है, क्रियान्वितियां है। सतयुग में प्रवेश करने वाले मानवों को इनसे गुजरना पड़ेगा। इनसे गुजरकर भी जो मानव जिन्दे बच जाएंगे वे सतयुग में प्रवेश करके सतयुग में जिन्दे रहने के अधिकारी होंगे। ऐसे मानवों का समूह परमेश्वर का परिवार होगा विश्व में।
१६०. सतयुगी साहित्य सृजन भी अपनी एक कला है। यह विशेष कला द्वारा सृजित होता है। जिनके सीधे तार परमपिता परमेश्वर से जुड़े है वे ही इस साहित्य का सृजन कर सकते हैं। जो पीढ़ी दर पीढ़ी सतोगुण का विश्व मानवता को पाठ पढ़ाते हैं। उनकी वांणी करनी, कथनी एक होने के कारण प्रभावशाली होती है। उनका लेखन भी प्रभावशाली होता है। पढ़ने वाला मानव पाप मुक्त हो जाएगा। यह कैलेण्डर भी सतयुगी कैलेण्डर होगा। जो मानवता पर पूर्ण सतयुगी प्रभाव डालेगा। पापमुक्त करेगा पढ़ने वाले विश्वमानवों को। यह नाथमत का वचन है। गीता पढ़ने से जो लाभ होता है वही पुण्य लाभ इस सतयुगी कैलेण्डर को पढ़ने से होगा। यह कैलेण्डर एक आधार का काम करेगा। जो सतयुगी आधार होगा।
१६१. आने वाला युग योगियों तथा महायोगियों का युग होगा। उपेक्षा बहुत हुई मगर अब उपेक्षा नहीं होगी। सात्विक जीवन जीने वालों का समय होगा। ईश्वरीय प्रयास सार्थक परिणाम लाएंगे। निराशाजनक समय इनके लिए जा चुका है। आशावादी दृष्टिकोण रखकर आत्मबल से चलने वाले लोगों का समय आ चुका है।
१६२. भयंकर विनाश होगा विश्व का। जो मार्च क्रन्ति से प्रारम्भ हो जाए तो उपरोक्त भविष्यवांणी को सत्य मान लेना। यह कसौटी है शुरूआत की। मार्च सुलग उठेगा जो विश्वव्यापी होगा।
१६३. अक्षरधाम जो गुजरात के मन्दिर है उन पर पहला प्रहार होगा वो भी ऐसा होगा कि उनके अस्तित्व समाप्त करेगा। ऐसा विद्रोह होगा आन्तरिक। उनकी बुराईयां ही उनके आन्तरिक विद्रोह का कारण होगा। बहुत ठगी कर ली। अब सत्य उजागर होगा। सत्य दब नहीं सकता। सत्य के प्रकट होने का समय प्रारम्भ हो चुका है मार्च २०२० से। उपरोक्त विश्व मार्च क्रान्ति का हिस्सा होगा।
१६४. धर्म के नाम पर जो भी कर्मकाण्ड और पाखण्ड किए जा रहे हैं वे बेनकाब होकर उन्हें उचित दण्ड मिलेगा अवतारवाद द्वारा।
१६५. सतयुगी साहित्य सृजन में नाथमत मददगार होकर उभरेंगे। यह नाथों की वचनबद्धता है।
१६६. लोकार्पण तिथि चैत्रशुक्ल एकम वर्ष प्रतिपदा विक्रम संवत् २०७७ तेजस गुफा सूक्ष्म शरीर से मान्य।
१६७. भारत का नवनिर्माण छिपा है विध्वंश तथा प्रलय के पीछे। बुराईयों तथा घोर कलयुग को जड़ से समाप्त करके भारत नवनिर्माण तथा उसके बाद विश्व नवनिर्माण सतयुग आधारित किया जाना पूर्वनिश्चित तथा पूर्वनिर्धारित है। इसी आधार पर भविष्यवाणियां की गई है जो यहां से लेकर सटीक भविष्यवाणियां की गई है। वे मनगढ़त बातें नहीं है। यहां के वचन प्रमाणित सत्य है।
१६८. अकोला एक शहर है। जो महाराष्ट्र में है। उसकी परियां विश्व विनाश करेगी। ऐसे कारण बनेंगे विदर्भ क्षेत्र के। यह एक गुप्त रहस्य है। राजनीति में भूचाल ला देगी बार बालाएं बनकर। उनमें हिंगलाज माता की मातृत्व शक्ति है। जो विश्व विनाश करायेगी।
१६९. रागी राग दरबार के, फागी फाग दरबार के, मात ही मातहत अनाथ के, गावे सिंह दरबार के, सनातन का उठयोड़ा घोड़ा, कभी पछाड़ नहीं खावे, सदा सद्बुद्धि और सनमति, दरबार नाथमत दिलावे।
१७०. धूंधलनाथ जी, घोरमनाथ जी, इस काजलवास समाधियों के संचालक मण्डल के अध्यक्ष है। युगों-युगों से उनकी अहम भूमिका रही है। धर्म के क्षेत्र में नीति निर्धारण में उनका स्पष्ट आदेश है। पंचाग प्रथा भविष्य की तथा नीतियां निर्धारण नाथमत की यहीं से उजागर हो। जिस पर सनातन धर्म आधारित है।
१७१. सत्य प्रमाणित वचन, भौतिक जगत में क्रियान्वित होंगे। त्यों-त्यों साधकों / आराधकों की आस्था बलवती होकर दृढ़ होती चली जाएगी। अनुशरण बढ़ेगा। आराधना मजबूत होगी। योगियों से महायोगी बनेंगे।
१७२. निर्वाण - एक शब्द है। जिसका अर्थ बहुत गहरा है। मोक्ष से अगली स्थिति का नाम निर्वाण है। जिसने त्याग और तपस्या से देश, धर्म, विश्व को आलोकित किया है ऐसे चैतन्य महाप्रभू की अन्तिम यात्रा को निर्वाण शब्द से सुशोभित किया जाता है नाथमत प्रथा के अनुसार। जो रामलाल जी सियाग ने निर्वाण प्राप्त किया था। मगर कुछ कमियां रह गई थी जिन्हें मृत्यु उपरांत संशोधित करके पूरी की जाएगी अपने गुरुओं द्वारा। यह अभियान प्रारम्भ हो चुका है। - जय नाथमत दिनांकः-१६.०३.२०२०

-योग के आदि गुरु मत्स्येंद्रनाथ जी।